संवाद

डेविड व्हीलर अपनी गणित पुस्तक मैथमैटिशियन मैटर्स फॉर दि लर्निंग ऑफ मैथमैटिक्स में लिखते हैं कि बहुत सारी गणित जानने के बजाय यह जानना अधिक उपयोगी है कि गणितीकरण कैसे किया जाए? राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 भी यही संस्तुति करती है कि विद्यालय में गणित शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए- बच्चे की गणितीकरण की क्षमताओं का विकास करना।

साथियों, गणित विद्यालय में माध्यमिक स्तर तक एक अनिवार्य विषय होता है। इसीलिए गुणवत्तापूर्ण गणित की शिक्षा हर बच्चे का अधिकार है। गणित की शिक्षा प्रत्येक बच्चे को सहज ढंग से उपलब्ध होनी चाहिए ताकि वह बच्चे के लिए बोझिल और गूढ़ न होकर एक आनंदपूर्ण अनुभव बन सके। हमारे देश में जहाँ कक्षा आठ के बाद बहुत सारे बच्चे विद्यालय छोड़ देते हैं, प्रारंभिक स्तर पर गणित शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों को भावी जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार कर सके।

राष्ट्रीय फोकस ग्रुप (गणित) के अनुसार हमारी दृष्टि में स्कूली गणित जिन परिस्थितियों में सीखा जाना चाहिए, वे हैं-

1. बच्चे गणित में आनंद लेना सीखें।

2. बच्चे महत्वपूर्ण गणित सीखें।

3. गणित बच्चों के जीवन-अनुभव का हिस्सा हो जिसके बारे में वे बातें कर सकें।

4. बच्चे अर्थपूर्ण समस्याएँ प्रस्तुत करें और हल ढूँढ़ें।

5. बच्चे संबंधों और समस्याओं की सोच बनाने में अमूर्त विचारों का प्रयोग सीखें।

6. बच्चे गणित की मूल संरचना को समझें।

शिक्षा के भूमंडलीकरण के संदर्भ में, सबसे पहला प्रश्न यह उठता है कि आठ सालों की स्कूली शिक्षा के दौरान बच्चे को कैसा गणित पढ़ाना चाहिए जो न केवल उसे उच्च माध्यमिक शिक्षा के लिए तैयार करे बल्कि जीवन भर उसके काम आए।

फोकस ग्रुप पेपर में ही शिक्षकों से यह अपेक्षा की गई है कि वे प्रत्येक बच्चे को कक्षा की प्रक्रियाओं के साथ जोड़ सकें। इसीलिए गणित पढ़ाने के दौरान एक शिक्षक का

मुख्य सरोकार होना चाहिए कि बच्चों के मन में गणित को लेकर जो डर और असफलता का भय होता है, उससे उन्हें मुक्ति दिला सकें और हर बच्चे को सफलता के भाव से जोड़ सकें। राष्ट्रीय पाठ्चर्या की रूपरेखा-2005 गणित के दायरे को और विस्तृत करने तथा इसे दूसरे विषयों से जोड़ते हुए पढ़ाने की ज़रूरत पर बल देती है।

महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन की 125वीं जयंती के उपलक्ष्य में वर्ष 2012 राष्ट्रीय गणित वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इसीलिए प्राथमिक शिक्षक पत्रिका का यह अंक गणित विशेषांक के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

गणित पढ़ाने के दौरान शिक्षक साथी इस बात का ध्यान रखें कि पूछे गए या हल करने के लिए दिए गए सवाल के जवाब में एक बँधे-बँधाए अपने ढंग से, या शिक्षक द्वारा सिखाए गए तरीके से ही उत्तर की अपेक्षा न रखें। एक ही सवाल को विद्यार्थी अनेक तरीकों से हल कर सकते हैं और प्रत्येक तरीका सही हो सकता है। विद्यार्थियों के सवाल हल करने के, अपने ढंग से सोचे गए नए तरीकों को सम्मान दें।

आइए, इस गणित वर्ष में सभी शिक्षक साथी यह संकल्प लें कि गणित सिखाने की रूढ़ और संकीर्ण सोच के दायरे से बाहर निकलकर गणित इस प्रकार सिखाएँ कि विद्यार्थियों के मन से गणित को लेकर उपजा भय दूर हो, गणित का गणित उनकी समझ में आ जाए और गणित एक आनंददायी विषय भी बने।

अकादमिक संपादक